विषय-सूची

प्रथम अध्याय

फारसी सूफी काव्य का विकास पृ० १–६७

फारसी सूफी काव्य का प्रवर्तक, सुलतान अबू सईद अबुल खैर, बाबा ताहिर, ख्वाजा अब्दुल्लाह अंसारी, हकीम सनाई, शेख अत्तार, मौलाना जलालुद्दीन रूमी, शेख सादी शीराजी, औहदुद्दीन किरमानी या अबू हामिद किरमानी, औहदी मरागी या औहदी मरागी इस्फहानी, ख्वाजा शम्सुद्दीन मुहम्मद 'हाफिज', शेख मुहम्मद शीरीं 'मगरिबी' तब्रेजी, शाह निमतुल्लाह 'वली', मौलाना नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान 'जामी', कवि उर्फी शीराजी, कवि सरमद, तसव्वुफ का फारसी काव्य पर प्रभाव।

द्वितीय अध्याय

हिंदी सूफी काव्य का विकास पृ० ६९–१४८

मौलाना दाऊद-चंदायन, राजन—प्रेमबन जोब निरंजन, कुतबन-मृगावती, जायसी—पदमावत, आखिरी कलाम, अखरावट, महरी बाईसी अथवा कहरानामा, चित्ररेखा, मसलानामा, मंझन-मधुमालती, उसमान—चित्रावली, शेखनबी—ज्ञानदीप, सूरदास—नलदमन, कासिमशाह—हंसजवाहिर, नूर मुहम्मद—इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी, शेखनिसार—युसुफजुलेखा, शाहनजफ अली सलोनी—प्रेम चिनगारी एवं अखरावटी, ख्वाजा अहमद—नूरजहाँ, शेख रहीम-भाषाप्रेमरस, कवि नसीर प्रेम दर्पण, निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय

हिंदी और फारसी सूफी काव्य में परतत्व की धारणा पृ० १४९–२०८

इजादिया, शुदूदिया, वजूदिया, फारसी एवं हिंदी सूफी कवि तथा इजादिया मत, फारसी एवं हिंदी सूफी कवि तथा शुदूदिया

मत, फारसी एवं हिंदी सूफी कवि तथा वजूदिया मत, निष्कर्ष।
सूफियों का परमतत्व–सगुण अथवा निर्गुण।

चौथा अध्याय

प्रतीकों का तुलनात्मक अध्ययन पृ० २०९–३१२
प्रतीक, उद्देश्य, प्रतीक प्रकृति, फारसी काव्य, प्रतीक प्रकृति हिंदी काव्य, फारसी सूफी कविता में प्रतीक, हिंदी सूफी काव्य में प्रतीक।

पंचम अध्याय

दोनों परंपराओं में कथानक रूढ़ियाँ पृ० ३१३—४५२
भारत और ईरान की कथाएँ और उनका आदान प्रदान, कथानक रूढ़ि, हिंदी एवं फारसी सूफी काव्यों के कुछ अभिप्रायों का सर्वेक्षण-पशु पक्षी, हाथी, अजगर, सियार, लोमड़ी, गधा, पक्षी–सीमुर्ग, शुक, हुदहुद, पक्षी–भविष्य वक्ता के रूप में, वायुदूत, पंछी दूत, प्रेमोत्पत्ति, स्वप्नदर्शन द्वारा प्रेमोत्पत्ति, चित्रदर्शन द्वारा प्रेमोत्पत्ति, रूप गुण श्रवण द्वारा प्रेमोत्पत्ति, साक्षात् दर्शन द्वारा प्रेमोत्पत्ति, वेश परिवर्तन, वैद्य ओझा आदि बुलाना, नायक या नायिका का एक स्थान से दूसरे स्थान तक अप्सराओं आदि द्वारा ले जाया जाना, देव वाणी, प्रेम पत्र, राक्षस, स्वप्न. स्वप्नदर्शन एवं उसका रहस्योद्घाटन, स्वप्न में किसी फिरिश्ता या बुजुर्ग का दर्शन देना।
हिंदी सूफी काव्य में प्रयुक्त कतिपय विशिष्ट व्यक्तिगत कथानक-रूढ़ियाँ–सिंहल द्वीप, जलयानध्वंस, पार्वती और महादेव, मिलन स्थान (शिव मंदिर) जलक्रीड़ा, नायक का नायिका से भिन्न किसी युवती की रक्षा करना, भावी सौत की चिंता तथा किसी पक्षी को मरवा डालने का प्रयत्न, सौतिया डाह, सती हो जाना, कुटनी प्रसंग, षट्ऋतु एवं बारहमासा, फारसी सूफी काव्य में प्रयुक्त कतिपय विशिष्ट व्यक्तिगत कथानक रूढ़ियाँ—पुरुष का पुरुष के प्रति प्रेम, बादशाह का गुलाम के प्रति प्रेम, बादशाह पर किसी साधारण व्यक्ति का आसक्त होना, प्रिय

या प्रिया की सुंदरता को कुरूपता में परिवर्तित करना, हाथी और अजगर की कथानकरूढ़ि वायुदूत, अप्सराओं द्वारा नायक का एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना, निष्कर्ष।

षष्ठ अध्याय

काव्य रूपों का तुलनात्मक अध्ययन पृष्ठ ४५३–५८९

फारसी काव्यरूप, कसीदा, गजल (उद्बोधन गीत), कत्आ (वृत्तखंड); रुबाई (चतुष्पदी), मसनवी (मथनवी या द्विपदी), मसनवी कठिनतम रूप, महाकाव्य तथा मसनवी, निष्कर्ष। हिंदी प्रेमाख्यानों का छंद विधान—दोहा, चौपाई का मूल उद्गम, दोहा, चौपाई, हिंदी सूफी काव्य में दोहा चौपाई का क्रम, निष्कर्ष।

फारसी भाषा का उद्गम और विकास व आर्य भाषाओं से इसका संबंध—भारत यूरोपीय कुल, आर्य अथवा भारत ईरानी उपकुल, अवेस्ता, प्राचीन फारसी, मध्यकालीन फारसी या पहलवी, आधुनिक फारसी, प्राचीन भारतीय आर्यभाषा, सूफी कवियों से पूर्व ईरान की सामाजिक परिस्थिति एवं भाषा का स्वरूप—सूफी कवियों का भाषा पर प्रभाव--सूफी कवियों की भाषा का रूप—ख्वाजा अब्दुल्लाह अंसारी, ख्वाजा फरीदुद्दीन 'अत्तार', औहदुद्दीन किरमानी, शेख ईराकी हमदानी, शेख महमूद शबिस्त्री, औहदी मरागी, ख्वाजा शम्सुद्दीन मुहम्मद हाफिज, मगरिबी मौलाना नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान 'जामी', निष्कर्ष।

हिंदी सूफी कवियों से पूर्व भाषा का स्वरूप—सूफी कवियों का भाषा पर प्रभाव, निष्कर्ष।

सूफियों द्वारा अवधी का प्रयोग क्यों, सूफी कवियों की भाषा का रूप, मौलाना दाऊद, कुतबन, मलिक मुहम्मद जायसी, मंझन, उसमान, शेखनबी, कवि कासिमशाह, नूर मुहम्मद, हुसेनी अली, शेख निसार, शेख नजफ अली सलोनी, शेख रहीम, नसीर, निष्कर्ष। अलंकृति तुलनात्मक अध्ययन,

नखशिख वर्णन से संबंधित उपमान, फारसी सूफी काव्य, हिंदी सूफी काव्य, प्रमुख उपमानों की सूची, नर्गिस।

फारसी में तरुणों का रूप सौंदर्य – भाव वर्णन के उपमान, फारसी, हिंदी. निष्कर्ष। फारसी सूफी काव्य, हिंदी सूफी काव्य, मृगावती, पदमावत, मधुमालती।

सप्तम अध्याय

काव्यगत रूढियाँ पृ० ५६१–७५८

काव्यरूढ़ि, रिवायत, फारसी साहित्य में प्रचलित काव्यरूढ़ियों के प्रधान विभाग--प्रथम विभाग--फिरिश्तों से संबधित काव्य-रूढ़ियाँ, पैगंबरों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ बादशाहों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, प्रख्यात पुरुषों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, पशु पक्षियों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, विश्वासों तथा अन्य वस्तुओं से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ--द्वितीय विभाग-बादशाहों से संबधित काव्य-रूढ़ियाँ--मारे जहहाक, अद्ले नौशीरवान, प्रख्यात पुरुषों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, पशुपक्षियों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, आतिशपरस्तों (अग्निपूजकों) से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, विश्वासों तथा अन्य वस्तुओं से संबंधित काव्य रूढ़ियाँ, भारतीय साहित्य में प्रचलित काव्यरूढ़ियों के मुख्य विभाग -- देवी देवताओं से संबंधित काव्य रूढ़ियाँ, अवतारों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, राजाओं से संबंधित काव्य-रूढ़ियाँ, प्रख्यात मानवों एवं दानवों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, राक्षसों से संबंधित काव्यरूढ़ियाँ, पशु पक्षियों से संबंधित काव्य-रूढ़ियाँ—फारसी साहित्य में प्रचलित कुछ मुख्य काव्यरूढ़ियाँ– आदम और हौवा, आहरमन या अहरमन या अहरिमन और यज्दान, आईना-ए-सिकंदर, अठारह सहस्र जीवजंतु अफ्लातून (प्लेटो), अनलहक (मंसूर हल्लाज), बागे इरम या शद्दाद, बुताने आजरी, तख्ते सुलेमान, जामेजम, जिब्राईल, जूए शीर, चाहे बाबिल हारूत व मारूत जुहरा, चनार, चूहा और धन, चीता और चाँद, हातिम या हातमताई, हजरत इब्राहीम (खलीलुल्लाह),

हजरत अय्यूब, हजरत दाऊद और लोहा, हजरत जकरीया, हजरत उमर, हजरत यूनस, हूर, खातिमे सुलेमान, खरे दज्जाल, खरे ईसा, खिज्र इलयास, ईसा तथा इद्रीस, खिज्र और हरियाली, खूने सियावश या सियावुश, दारा सिकंदर, दिरफ्शे कावयानी, जुलकर्नैन या सिकंदर, सात समुद्र, सदह (सदा), समंदर, सोजने ईसा, शब चिराग, शराब, सक्कुल कमर, शमअ् (शमा) और परवाना (दीपक और पतंगा), शम्अ-ए-तूर, तूफाने नूह या कश्ती-ए-नूह, अनासिरे अर्बा या चार तत्व, अन्का, गोल, कक्नुस मूसीकार, कुम बइजनी या दमे ईसा, मुर्गे ईसा, मुर्गे मसीहा, चमगादड़, कमाने रुस्तम, कुन (होजा), कोह काफ, कोह कने फर्हाद, गावे जमीन, गुल व बुलबुल, गंजे कारून अथवा कारूँ, गोसाला-ए-सामिरी, मारे जह्हाक, माहे नख्शब, मजनूँ, मोजिजाते मूसा, मुग अथवा मुग बच्चा, पीरे मुगान, मुगीलाँ, बबुर अथवा कीकर, मन्न व सल्वा, मेहूर गिया अथवा मेहूर गियाह, मोती एवं विष, मयूर, नमरूद और पशा, नूरुल मुहम्मदीया (मुहम्मद का आलोक), नोशदारू, नौशीरवान अथवा कस्रा की न्यायप्रियता, हफ्त इक्लीम अथवा किश्वर, हफ्त व नुह (१६ शृंगार), हुमा, यदे बैजा, भारतीय साहित्य में प्रचलित कुछ प्रमुख काव्यरूढ़ियाँ--अप्सरा, अमृत, आभरण, इंद्र का अखाड़ा, ऐरावत, कबिलास (कैलास), कचूर, कर्ण, कपूर, कामदेव -धनुष और बाण, कुंभकरण की खोपड़ी, कुमुद तथा पद्म (कमल), कूर्म, कोकिल; खाराजल, गरुड़, चंदन, चंद्र और राहु, चकवा चकवी, चकोर चाँद, चौदह खंड, चौदह विद्या डोम या चांडाल, दिक्शूल, पपीहा (चातक), पारस, पुत्र वियोग, बलि की दानशीलता, भर्तृहरि की विरक्ति, भृंगी, भोज की विद्वत्ता एवं वीरता, भ्रमर और केतकी, मत्स्य (मच्छ), मनु शतरूपा, मृग और अग्नि, मृग और वीणा, मोती, युधिष्ठिर, राजा विक्रम अथवा सकबंधी विक्रम, राजा विक्रम और हीरामन, रावण, लक्ष्मी, वज्र और सुमेरु वररुचि की विद्वत्ता, वासुकी, विष, व्यास, शरीर के सोलह शृंगार, शशिवाहन, शुकदेव, शेष सर्पराज, संगीत वीणावादन, संजीवनी, सप्तद्वीप, समुद्र और

दान, सरस्वती, सरस्वती और लक्ष्मी में वैर, सहदेव का पांडित्य, सात पाताल, सात समुद्र, सारस, सुमेरू, सेमर का फूल तथा शुक, सोलह सिंगार (शृंगार) स्वातिबिंदु, हंस, हनुमान, हरिश्चंद्र, हारिल, निष्कर्ष।

अष्टम अध्याय

उपसंहार — पृ० ७५६–७६३

सहायक ग्रंथसूची — ७६५–७८१